दिनांक 23-10-1975 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

इन्तज़ार को छोड़कर इन्तज़ाम करो

बापदादा देखते हैं तक़दीरवान बच्चों की तस्वीर
अपनी अपनी है बच्चों की तक़दीर की लकीर

चारों सब्जेक्ट्स की चारों रेखाओं को चमकाओ
पास विद ऑनर बनकर अष्ट रत्नों में तुम आओ

आधारमूर्त बच्चों तुम कोई आधार ना अपनाओ
अपने श्रेष्ठ संकल्पों के आधार पर कार्य कराओ

इन्तजार की मीठी नींद में खुद को नहीं सुलाओ
पूरे होश में आकर अपना इन्तजाम करते जाओ

माया को परखने की विशेष शक्ति धारण करना
समय की गिनती छोड़कर खुद को समर्थ करना

प्रकृति को आदेश देने के अधिकारी बन जाओ
संशय सभी मिटाकर तुम विजयन्ति कहलाओ

निश्चय बुद्धि बनकर विश्व-परिवर्तन तुम करना
बाप का परिचय देने का विशाल सम्मेलन करना

विश्व कल्याण की भावना अपने अन्दर जगाओ
दुखों से छुड़ाने की कामना उत्पन्न करते जाओ

संकल्पों में खुद को तुम अचल अडोल बनाओ
संकल्पों की शक्ति से अन्तिम घड़ी पास लाओ